सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

मूल्य ₹ 3/-

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 93 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शनिवार 9 मई, 2026

अगर आपका मन मजबूत है और आप उसमें एक दृढ संकल्प स्थापित कर देते हैं तो आप अपना भाग्य बदल सकते हैं।

–परमहंस योगानंद

बीसीसीआई की टीम में बड़े... 7 | हिमाचल प्रदेश में शहरी निकायों... 3 | भाजपा का काम नकारात्मकता... 2

पंजाब में ईडी की दस्तक से सियासत में भूचाल

क्या आप मॉडल तोड़ने की तैयारी शुरू?

» भाजपा पर चौतरफा वार

» आप ने मोदी सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पंजाब जहां कभी आम आदमी पार्टी ने नई राजनीति का झंडा उठाया था आज वहीं सत्ता के गलियारों में एक पुराना सवाल बारूद बनकर फट रहा है कि क्या पंजाब में अब ऑपरेशन लोटस का अगला अध्याय लिखा जाना शुरू हो चुका है। आज सुबह-सुबह चंडीगढ़ में हलचल बढ़ती है सरकारी आवास के बाहर गाड़ियों का काफिला रुकता है। ईडी के अधिकारी उतरते हैं और सीधे पहुंचते हैं पंजाब सरकार के कैबिनेट मंत्री संजीव अरोड़ा के घर। बस यहीं से शुरू हो जाती है राजनीतिक विस्फोट की कहानी।

आज अभी तक की पंजाब में ईडी की की गयी कार्रवाई से आम आदमी पार्टी आगबबूला हो गयी है और कह रही है कि यह जांच नहीं राजनीतिक दबाव है। यह कानून नहीं डराने की रणनीति है। यह भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई नहीं चुनाव से पहले विपक्ष को कमजोर करने की स्क्रिप्ट है। लेकिन सवाल सिर्फ छापेमारी का नहीं है सवाल टाइमिंग का है। सवाल उस पैटर्न का है जो पिछले कुछ वर्षों में देश की राजनीति में बार-बार दिखाई दिया है। पहले ईडी फिर सीबीआई फिर राजनीतिक दबाव और उसके बाद सत्ता के समीकरणों में बदलाव। महाराष्ट्र में हुआ झारखंड में आरोप लगे दिल्ली में टकराव दिखा और अब पंजाब में वही आहट सुनाई दे रही है। क्या भाजपा पंजाब में अपनी राजनीतिक जमीन तैयार कर रही है? क्या आम आदमी पार्टी को चुनाव से पहले घेरने की रणनीति बनाई जा रही है? या फिर सचमुच करोड़ों के घोटाले की परतें खुलने वाली हैं?

पंजाब सरकार के कैबिनेट मंत्री संजीव अरोड़ा के घर पर ईडी की छापेमारी

हर बड़े विपक्षी दल के नेताओं तक ईडी की कार्रवाई पहुंची

- महाराष्ट्र में अनिल देशमुख से लेकर संजय राउत तक
- दिल्ली में मनीष सिसोदिया से लेकर सत्येंद्र जैन तक
- झारखंड में हेमंत सोरेन
- बंगाल में पार्थ चटर्जी
- बिहार में लालू परिवार

पंजाब में ईडी की एंट्री और सियासी धमाका

आज सुबह पंजाब की राजनीति में उस वक्त भूचाल आ गया जब प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी ने पंजाब सरकार के कैबिनेट मंत्री और आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता संजीव अरोड़ा के चंडीगढ़ स्थित सरकारी आवास पर छापेमारी की कार्रवाई शुरू कर दी। ईडी की टीम भारी सुरक्षा और दस्तावेजी तैयारी के साथ पहुंची। बताया जा रहा है कि दिल्ली, गुरुग्राम और चंडीगढ़ समेत कई ठिकानों पर एक साथ ईडी की कार्रवाई की गई। जांच एजेंसी कथित तौर पर 100 करोड़ रुपये के फर्जी जीएसटी मोबाइल फोन खरीद और एक्सपोर्ट रैकेट की जांच कर रही है। आरोप है कि फर्जी कंपनियों और नकली बिलों के जरिए आईटीसी एक्सपोर्ट रिफंड और ड्यूटी ड्रॉबैक का लाभ उठाया गया।

क्या पंजाब में शुरू हो चुका है ऑपरेशन लोटस?

यही वह सवाल है जो अब पंजाब की राजनीति में सबसे ज्यादा गूंज रहा है। आप इसे सिर्फ कानूनी कार्रवाई नहीं बल्कि राजनीतिक ऑपरेशन मान रही है। पार्टी नेताओं का आरोप है कि भाजपा विपक्षी सरकारों को अस्थिर करने के लिए जांच एजेंसियों का इस्तेमाल कर रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पंजाब में भाजपा अभी संगठनात्मक रूप से उतनी मजबूत नहीं है लेकिन अगर विपक्षी दलों में टूट-फूट या दबाव की राजनीति शुरू होती है तो समीकरण तेजी से बदल सकते हैं।

आप का पलटवार डराने की राजनीति नहीं चलेगी

ईडी की कार्रवाई के तुरंत बाद आम आदमी पार्टी पूरी तरह आक्रामक मोड में आ गई। पंजाब सरकार के मुख्य प्रवक्ता कुलदीप धालीवाल ने कहा है कि भाजपा लगातार जांच एजेंसियों का इस्तेमाल विपक्षी नेताओं को डराने के लिए कर रही है। उन्होंने कहा कि संजीव अरोड़ा एक कारोबारी पृष्ठभूमि से आते हैं और उन्हें जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। वहीं कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा ने इसे सीधे-सीधे चुनावी रणनीति करार दिया। उनका कहना है कि पंजाब विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही भाजपा ने दबाव की राजनीति शुरू कर दी है। आप नेताओं का दावा है कि पहले भी ऐसी कार्रवाइयां हुईं लेकिन कुछ साबित नहीं हुआ।

भाजपा चुप लेकिन विपक्ष हमलावर

दिलचस्प बात यह है कि इस पूरे प्रकरण पर भाजपा की तरफ से बेहद सीमित प्रतिक्रिया आई है लेकिन विपक्षी दलों ने हमला तेज कर दिया। शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता बिक्रम सिंह मजीठिया ने सोशल मीडिया पर दावा किया कि यह कार्रवाई हैम्पटन स्काई रियल्टी लिमिटेड और उससे जुड़े कथित वित्तीय लेनदेन को लेकर हो रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि फर्जी जीएसटी बिलों के जरिए सरकारी खजाने को भारी नुकसान पहुंचाया गया और पैसों को दुबई के जरिए राउंड ट्रिपिंग में इस्तेमाल किया गया।

ईडी छापेमारी और राजनीति पहले भी उठते रहे सवाल

पिछले कुछ वर्षों में देश की राजनीति में ईडी की कार्रवाई सबसे बड़ा राजनीतिक हथियार बनकर उभरी है। लगभग हर बड़े विपक्षी दल के नेताओं तक ईडी की कार्रवाई पहुंची। विपक्ष लगातार आरोप लगाता रहा है कि जांच एजेंसियों का इस्तेमाल राजनीतिक दबाव बनाने के लिए हो रहा है। हालांकि केंद्र सरकार और भाजपा हर बार इन आरोपों को खारिज करते हुए कहती रही है कि एजेंसियां पूरी तरह स्वतंत्र हैं और भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई कानून के दायरे में हो रही है। लेकिन दिलचस्प तथ्य यह है कि जिन नेताओं पर कार्रवाई हुई उनमें से कई बाद में राजनीतिक रूप से कमजोर पड़े कुछ ने दल बदले और कुछ के सत्ता समीकरण बदल गए। यही वजह है कि अब पंजाब में हुई ईडी की ताजा कार्रवाई को सिर्फ जांच नहीं बल्कि बड़े राजनीतिक संकेत के तौर पर देखा जा रहा है।

भाजपा का काम नकारात्मकता फैलाने और झगड़ा लगवाने का है: अखिलेश

» सपा प्रमुख बोले- गलत हाथों में चला गया है देश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि सरकार के पास जनता के लिए कोई काम नहीं है और वह सिर्फ लोगों के बीच झगड़े कराने की राजनीति कर रही है। उनके बयान के बाद प्रदेश की सियासत में बयानबाजी तेज हो गई है। अखिलेश यादव ने लखनऊ के सपा कार्यालय में शनिवार को प्रेसवार्ता की।

इस दौरान उन्होंने भाजपा पर कई बड़े आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि भाजपा के पास कोई काम नहीं है, ये लोग नकारात्मकता फैलाते हैं, एक-दूसरे में झगड़ा लड़वाते हैं। इसके अलावा इनके पास कोई काम हो तो बताएं। इससे पहले अखिलेश यादव ने कहा था कि जब बिजली के स्मार्ट मीटर में हो सकती है गड़बड़ी तो ईवीएम में क्यों नहीं, चुनाव आयोग इसे देखे वही दोनों डिप्टी सीएम पर बड़ा हमला बोला। उधर गाजीपुर कांड पर अखिलेश ने यूपी में महिला सुरक्षा पर सरकार को घेरा। साथ ही उन्होने कहा जांच एजेंसियों का दबाव और लालच देकर पार्टियां तोड़ती है भाजपा, महिला आरक्षण पर भ्रम फैलाया।

विधानसभा चुनावों की तैयारियों में जुटी सपा

सपा ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिए रणनीति बनानी प्रारंभ कर दी है। जैसे-जैसे जिन क्षेत्रों में टिकट फाइनल होते जाएंगे, वैसे-वैसे उन क्षेत्रों में बड़ी रैलियों के आयोजन का कार्यक्रम फाइनल किया जाएगा। लेकिन, किसी भी क्षेत्र के टिकट फाइनल करने से पहले वहां रैलियों का कार्यक्रम नहीं रखा जाएगा। पदाधिकारियों और नेताओं के बीच अंतरविरोधों को न्यून रखना चाहती है। ताकि, चुनाव के दौरान उसे गैरजरूरी नुकसान न उठाने पड़ें। बिना टिकट घोषित किए रैली करने के कई बार खराब परिणाम भी सामने आते हैं। रैलियों में कई दावेदार अपना टिकट फाइनल मानकर संसाधन लगाते हैं और जब टिकट किसी और को मिलता है तो वे पार्टी के प्रत्याशी के खिलाफ काम करने लगते हैं। इसलिए सपा नेतृत्व ने निर्णय लिया है कि पहले टिकट फाइनल करेंगे। संबंधित नेता को पूरी तैयारी से मैदान में उतरने के लिए कहा जाएगा। उसके बाद रैली का कार्यक्रम रखा जाएगा। टिकट को लेकर स्थिति एकदम साफ करने के बाद सभी नेताओं, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से मदद करने के लिए कहा जाएगा।

राजभर को घेरने की तैयारी

उत्तर प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री और सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर लगातार सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पर निशाना साध रहे हैं। इन सबके बीच सपा नेतृत्व ने फैसला किया है कि ओमप्रकाश राजभर को जवाब सपा महिला विंग की अध्यक्ष सीमा राजभर ही देंगी। सीमा राजभर सुभासपा से ही सपा में शामिल हुई हैं। इस संबंध में सपा ने अपने सभी नेताओं को निर्देश दे दिए हैं। आजादी से पहले भी देश के विरोधी थे और आज़ादी के बाद भी हैं। अब वो निर्णायक समय आ गया है, जब हम सबको मिलकर इन देश विरोधी नकारात्मक ताकतों को हमेशा के लिए हराना होगा।

सरकार बनने पर महाराणा प्रताप जयंती पर दो दिन का अवकाश दिया जाएगा

अखिलेश यादव ने कहा कि उनकी सरकार बनने पर महाराणा प्रताप जयंती पर दो दिन का अवकाश दिया जाएगा। गोमती रिवर फ्रंट पर महाराणा प्रताप की प्रतिमा लगाने की घोषणा की। प्रतिमा में चेतक और भाला सोने का होगा। अखिलेश यादव ने कहा कि पश्चिम बंगाल चुनाव परिणामों के बाद अब बात केवल चुनाव की प्रक्रिया को बचाने की नहीं है, देश को बचाने की है। आज देश उन गलत हाथों में चला गया है, जो पीडीए के वर्तमान व भविष्य के हक और अधिकारों के घोर विरोधी हैं।

लोकतांत्रिक परंपरा के अनुसार टीवीके को मिले पहला मौका: अधीर रंजन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि देश की लोकतांत्रिक परंपरा के अनुसार, तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) को अपना बहुमत साबित करने का मौका दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि टीवीके को पहला मौका मिलना चाहिए।

उन्होंने कहा, देखिए, नियमों के अनुसार, राज्यपाल को सबसे बड़ी पार्टी को आमंत्रित करना चाहिए। मेरी यही समझ है। अगर राज्यपाल आमंत्रण देने से पहले सीटों की संख्या पूछते हैं, तो यह राज्यपाल के पद के लिए ठीक नहीं है। सबसे अधिक सीटों वाली पार्टी, इस मामले में विजय टीवी, को पहले आमंत्रित किया जाना चाहिए। अगर वे अपना बहुमत साबित करने में विफल रहते हैं, तो यह अलग बात है, लेकिन उन्हें पहला मौका मिलना चाहिए।

यह हमारे देश की लोकतांत्रिक परंपरा है, और मेरा मानना है कि राज्यपाल को इसका पालन करना चाहिए। पश्चिम बंगाल के विपक्ष नेता सुवेंदु अधिकारी के निजी सहायक चंद्रनाथ रथ की हत्या पर प्रतिक्रिया देते हुए चौधरी ने कहा कि सच्चाई जल्द ही सामने आएगी। कांग्रेस नेता ने इस बात पर भी जोर दिया कि ऐसे जटिल मामलों को सुलझाने में माहिर पूर्व महानिदेशक राजेश कुमार ने बंगाल पुलिस से हत्या के मामले में सच्चाई का पता लगाने में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का आग्रह किया था।

बीजेपी की चालों के आगे नहीं झुकेंगे: भगवंत मान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने शनिवार को भाजपा पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के दुरुपयोग का आरोप लगाया। ईडी ने पंजाब के मंत्री और विधायक संजीव अरोरा के घर पर फिर से तलाशी ली। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि एक साल में यह तीसरी बार है जब ईडी अरोरा के घर आई है और पिछले महीने में यह दूसरी बार है। हालांकि, उन्होंने दावा किया कि अभी तक कुछ भी नहीं मिला है।

उन्होंने कहा कि पंजाब दबाव या राजनीतिक हथकंडों के आगे नहीं झुकेगा। एक पोस्ट में पंजाब के मुख्यमंत्री ने लिखा कि आज एक बार फिर भाजपा की ईडी संजीव अरोरा के घर आई है। एक साल में यह तीसरी बार जब भाजपा की ईडी उनके घर आई है। और पिछले एक महीने में यह दूसरी बार है। फिर भी, उन्हें कुछ नहीं मिला है। मैं मोदी जी को बताना चाहता हूं कि पंजाब गुरुओं की भूमि है, जिसे औरंगजेब भी अपने अधीन नहीं कर सका।

हरियाणा कांग्रेस को मिलेगा नया चेहरा

» राहुल की रजामंदी से बृजेंद्र सिंह को मिलेगा मौका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के दांव से बृजेंद्र सिंह हरियाणा कांग्रेस का नया चेहरा बनेंगे। बृजेंद्र सिंह की यात्रा में राहुल की एंट्री से हरियाणा कांग्रेस के सियासी संकेत बदल गए हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उम्रदराज हो चुके हुड्डा के बाद कांग्रेस को एक ऐसे चेहरे की तलाश है जो युवा मतदाताओं और जाट राजनीति दोनों में स्वीकार्यता रखता हो।

राहुल की नजर में बृजेंद्र सिंह इस समीकरण में फिट बैठते दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी का बृजेंद्र सिंह की सद्भावना यात्रा में शामिल होना केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि कई बड़े संकेत देने वाली रणनीतिक पहल मानी जा रही है।

समीकरण में फिट बैठते दिखाई दे रहे

राहुल की नजर में बृजेंद्र सिंह इस समीकरण में फिट बैठते दिखाई दे रहे हैं। राहुल गांधी ने यात्रा में शामिल होने के साथ बृजेंद्र सिंह को बधाई देने के साथ यह भी कहा कि उनकी यात्रा को मेरा, हरियाणा कांग्रेस और राष्ट्रीय कांग्रेस का पूरा सपोर्ट है। राहुल गांधी के ये शब्द इसलिए भी मायने रखते हैं, क्योंकि हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष, यहां तक प्रभारी ने भी इस यात्रा से किनारा कर लिया था।

अपनी टीम में बृजेंद्र सिंह को बड़ा ओहदा भी दे सकते हैं राहुल गांधी

ऐसे में राहुल गांधी का इन नेताओं को भी एक कड़ा संदेश है कि अब पार्टी के अंदर गुटबाजी नहीं चलेगी। अब सभी की नजरें बृजेंद्र सिंह के अगले कदम पर टिकी है। यानी इस यात्रा के बाद वे प्रदेश के अंदर क्या कार्यक्रम चलाते हैं। माना जा रहा है कि आने वाले समय में राहुल गांधी अपनी टीम में बृजेंद्र सिंह को बड़ा ओहदा भी दे सकते हैं।

राजनीतिक गलियारों में इस यात्रा को कांग्रेस के अंदर नेतृत्व परिवर्तन और नए सामाजिक समीकरणों की तैयारी के तौर पर देखा जा रहा है। सबसे बड़ा संकेत यही है कि राहुल गांधी अब हरियाणा में बृजेंद्र सिंह को एक नए चेहरे के रूप में आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं।

युवा, पढ़े-लिखे और जाट बिरादरी से आने वाले बृजेंद्र सिंह को कांग्रेस भविष्य की राजनीति के केंद्र में रखने की कोशिश कर रही है। खास बात यह है कि राहुल गांधी पहली बार किसी कांग्रेस नेता की निजी यात्रा में शामिल हुए हैं। इससे पहले कई राज्यों में कई वरिष्ठ नेताओं ने यात्राएं निकालीं मगर राहुल गांधी ने व्यक्तिगत तौर पर भागीदारी नहीं की। ऐसे में इस उपस्थिति को सामान्य राजनीतिक शिष्टाचार से कहीं बड़ा संदेश माना जा रहा है। हरियाणा कांग्रेस में लंबे समय से भूपेंद्र सिंह हुड्डा का प्रभाव रहा है मगर यह भी सच है कि उनके नेतृत्व में हरियाणा कांग्रेस ने लगातार तीन चुनाव हारे भी हैं। रणदीप सुरजेवाला व कुमारी सैलजा अपने-अपने वोटरों में तो प्रभाव रखते हैं, मगर कांग्रेस को एकजुट करने में उनका नेतृत्व कहीं न कहीं कमजोर साबित रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उम्रदराज हो चुके हुड्डा के बाद कांग्रेस को एक ऐसे चेहरे की तलाश है जो युवा मतदाताओं और जाट राजनीति दोनों में स्वीकार्यता रखता हो।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

भाजपा शासित राज्यों में हो रहा अत्याचार: पप्पू यादव

» दिल्ली में बिहार के युवक की मौत पर भड़के पूर्णिया सांसद

» बंगाल में गोधरा जैसा कांड हो सकता है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने भाजपा पर करारा प्रहार किया। उन्होंने दिल्ली में पुलिस की गोली से बिहार के युवक की मौत पर कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि भाजपा शासित राज्यों में बिहार के लोगों पर लगातार अत्याचार हो रहा है। इस मामले में देश की राजधानी दिल्ली भी अछूती नहीं रही है।

वहीं बंगाल में भाजपा सरकार आने पर भी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि बंगाल में अब गोधरा जैसा कांड हो सकता है।

उधर पटना के बाढ़ में स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में परीक्षा फॉर्म नहीं भराए जाने को लेकर छात्रों का विरोध प्रदर्शन जारी है। छात्रों ने प्रिंसिपल पर जातिवाद, क्षेत्रवाद और बिहारी छात्रों के अपमान का आरोप लगाया है। इसी बीच परीक्षा से रोके जाने पर एक छात्र द्वारा आत्महत्या की कोशिश किए जाने से मामला और गंभीर हो गया है। इसको लेकर भी पप्पू यादव भड़के।

खास वर्ग के छात्रों को परेशान कर रहे प्रिंसिपल

छात्रों का आरोप है कि कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. के.एल. पुष्कर छात्रों के साथ जातिवाद और क्षेत्रवाद करते हैं तथा जानबूझकर खास वर्ग के छात्रों को परेशान कर रहे हैं। आरोप है कि छात्रों को कई बार बिहारी कहकर अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया। बताया जा रहा है कि लगभग 70 से 80 फाइनल ईयर के छात्रों का परीक्षा फॉर्म नहीं भरा जा सका है। जानकारी के अनुसार बीती रात पोर्टल खुला भी, लेकिन केवल चयनित छात्रों का ही फॉर्म भरा गया।

राजधानी पटना के बाढ़ अनुमंडल के राणाबीघा गांव के पास स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में परीक्षा फॉर्म नहीं भराए जाने को लेकर गुरुवार से ही कॉलेज गेट पर छात्रों का विरोध प्रदर्शन जारी है। 11 मई से परीक्षा शुरू होनी है, लेकिन छात्रों का आरोप है कि कॉलेज प्रशासन उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है। पुलिस ने छात्रों को एफआईआर कर जीवन बर्बाद होने की धमकी देकर कॉलेज परिसर के पास से हटाया। इसके बाद छात्र और उनके परिजन रात में ही एसडीओ गरिमा लोहिया से मिलने पहुंचे, लेकिन मुलाकात नहीं हो सकी और सभी को वापस लौटना पड़ा।

हिमाचल प्रदेश में शहरी निकायों के चुनावों का ऐलान, मचेगा घमासान

4 नगर निगम, 25 नगर परिषद में चुनाव होने जा रहे

» हिमाचल प्रदेश के 51 शहरी निकायों के लिए 17 मई को वोट डाले जाएंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। पांच राज्यों के चुनाव में जहां तीन राज्यों में एनडीए एक में कांग्रेस गठबंधन व एक जगह नई पार्टी ने सत्ता पर अपना दावा कर दिया है। अभी ये चुनाव खत्म नहीं कि अब एक और चुनाव की आहट सुनाई दे रही है। वह है हिमाचल प्रदेश में स्थनीय निकाय संस्थाओं के चुनावों की। ये चुनाव अहम हैं क्योंकि 2027 के अंतिम माह में वहां विस चुनाव होने हैं। ये चुनाव कांग्रेस सरकार की कामकाज को जहां तौलेगा वही भाजपा के भविष्य को भी संदेश दे देगा। हालांकि उससे पहले 2027 में यूपी और पंजाब दोनों सियासी दलों की जनता के बीच में पोजिशिंनिंग भी पता चल जाएगी।

उधर पिछले दिनों महाराष्ट्र, गुजरात व दिल्ली के निकाय चुनाव में भाजपा का दबदबा रहा पर देखना होगा कि हिमाचल में क्या होता है। चुनाव आयोग ने स्थनीय निकाय संस्थाओं के चुनावों का ऐलान कर दिया है। राज्य चुनाव आयोग ने 51 शहरी निकायों के चुनावों का ऐलान कर दिया है। इस दौरान 4 नगर निगम, 25 नगर परिषद में चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे में अब इन इलाकों में आचार संहिता लग गई है। हिमाचल प्रदेश के 51 शहरी निकायों के लिए 17 मई को वोट डाले जाएंगे। आयोग ने कहा है कि राज्य के पंचायत चुनावों की घोषणा भी एक सप्ताह के भीतर की जाएगी। आयोग के अनुसार मतगणना 31 मई से पहले पूरी होगी। निर्वाचन आयोग के ऐलान के बाद 51 शहरी निकायों में चुनाव होंगे। इनमें सोलन, धर्मशाला, पालमपुर और मंडी नगर निगम, 25 नगर परिषद और 22 नगर पंचायत शामिल हैं। इसके लिए राज्य के कुल 1806 मतदान केंद्र में वोटिंग होगी। आयोग के अनुसार 17 मई सुबह 7 से दोपहर तीन बजे तक मतदान होगा। नगर पंचायत और नगर परिषद के चुनाव की उसी दिन मतगणना हो जाएगी। नगर निगम की मतगणना 31 मई को होगी।

कांग्रेस सरकार का होगा टेस्ट

हिमाचल प्रदेश स्थानीय निकाय और पंचायत चुनावों में सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार का सियासी टेस्ट होगा। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस दिसंबर 22 को घोषित नतीजों में जीत हासिल की थी। पार्टी ने 68 में से 40 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत हासिल किया था। सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में दिसंबर 22 में यह सरकार सत्ता में आई। इसके बाद राज्य में विधानसभा के उपचुनावों में कांग्रेस ने साख बचा ली थी, हालांकि लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को झटका लगा था। बीजेपी ने राज्य में सत्ता होने के बाद भी सभी चार सीटों पर कब्जा जमाया था। सुप्रीम कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश सरकार से 31 मई के पहले चुनाव कराने को कहा था। प्रदेश में 74 में से 51 शहरी निकायों में चुनाव होंगे। इसके अलावा बाकी में चुनाव अगले दो साल में कराए जाने की उम्मीद है।

कब क्या होगा

- 21 अप्रैल को चुनाव आयोग अधिसूचना जारी की
- 29 अप्रैल तक मतदान केंद्रों की सूची जारी हुई।
- 29, 30 अप्रैल और दो मई को नामांकन दाखिल हुए
- 6 मई को दोपहर 3 बजे तक नाम वापस ले सके।
- 17 मई को वोट डाले जाएंगे, 31 मई को होगी काउंटिंग

पंचायत चुनाव पर फैसला जल्द

राज्य निर्वाचन आयुक्त अनिल खाची ने कहा कि पंचायत चुनाव का एक सप्ताह के भीतर एलान कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार और चुनाव आयोग के बीच कोई टकराव नहीं है। अनिल खाची ने यह स्पष्ट कर दिया कि 31 मई से पूर्व ही पंचायत चुनाव भी करवा दिए जाएंगे, इसलिए निकायों की मतगणना 31 मई को रखी गई है। निर्वाचन आयुक्त ने कहा कि 1,80,963 पुरुष और 1,79,882 महिला मतदाता मतदान करेंगे। 1808 मतदाता पहली बार मतदान करेंगे। मतदाता 16 प्रकार के पहचान पत्रों का इस्तेमाल कर सकेंगे। आयोग के अनुसार मतदान से 48 घंटे पूर्व शराब के ठेके बंद रहेंगे, मतगणना के दिन भी बंद रहेंगे। नगर निगम के लिए एक लाख, नगर परिषद के लिए 75 हजार व नगर पंचायत प्रत्याशी के लिए 50 हजार रुपये खर्च सीमा तय की गई है। आने वाले समय में अगर आयोग ऐलान करता है तो राज्य की 3758 पंचयतों में प्रधान, उपप्रधान व वार्ड पंच सहित जिला परिषद वार्ड और बीडीसी सदस्य के लिए मतदान होगा।

बंगाल में बीजेपी की चाल के बाद झारखंड में हलचल

झामुमो-कांग्रेस गठबंधन में आई खटास को दूर करने की तैयारी

» गठबंधन की नजर, रणनीति बनाने पर जोर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। पश्चिम बंगाल में बीजेपी की बड़ी जीत ने न सिर्फ राष्ट्रीय राजनीति में हलचल मचाई है, बल्कि इसका असर पड़ोसी राज्य झारखंड की राजनीति पर भी पड़ने की संभावना जताई जा रही है। झारखंड में कांग्रेस के भीतर बढ़ती अंदरूनी कलह और झामुमो-कांग्रेस गठबंधन में आई खटास ने राजनीतिक समीकरणों को और जटिल बना दिया है।

ऐसे में आने वाले समय में राज्य की सियासत में बड़े बदलाव के संकेत मिल रहे हैं। देश के पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों की मतगणना में तीन राज्यों में भारतीय जनता पार्टी को मिली बंपर जीत से पार्टी कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह देखा जा रहा है। खासकर पश्चिम बंगाल में पहली बार बीजेपी के सत्ता में आने को एक बड़ी राजनीतिक उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। बीजेपी ने ममता बनर्जी के मजबूत गढ़ को भेदते हुए राज्य में सरकार बनाने में सफलता हासिल की। माना जा रहा है कि पार्टी ने हिंदू वोट बैंक को एकजुट कर अपने पक्ष में माहौल बनाया, जिससे यह जीत संभव हो सकी।

झारखंड की राजनीति पर पड़ सकता है असर

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि बंगाल में इस बदलाव का असर पड़ोसी राज्य झारखंड की राजनीति पर भी देखने को मिल सकता है। अक्सर यह कहा जाता है कि बंगाल की सियासी हलचल का असर झारखंड तक पहुंचता है, ऐसे में यहां भी राजनीतिक समीकरण बदलने की संभावना जताई जा रही है।

आगे की सियासत की संभलेगी डगर

फिलहाल, यह देखना दिलचस्प होगा कि बंगाल की इस राजनीतिक जीत का झारखंड की राजनीति पर कितना और कैसा असर पड़ता है। आने वाले समय में राज्य की सियासत किस दिशा में जाएगी, इस पर सबकी नजरें टिकी हुई हैं।

कांग्रेस में अंदरूनी कलह आई बाहर

इधर, कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) के भीतर अंदरूनी मतभेद खुलकर सामने आने लगे हैं। पार्टी के वरिष्ठ नेता और वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने प्रदेश संगठन के कामकाज पर सवाल उठाते हुए झारखंड प्रभारी को पत्र लिखा है। वहीं, स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने भी संगठन के प्रति असंतोष जाहिर किया है। वहीं, झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस के बीच रिश्तों में भी खटास की चर्चा तेज हो गई है। बंगाल और असम में कांग्रेस के खराब प्रदर्शन के बाद झामुमो का भरोसा कुछ कमजोर पड़ता दिख रहा है। इसके पीछे असम और बिहार चुनावों में सीट बंटवारे को लेकर असंतोष भी एक कारण माना जा रहा है।

गठबंधन में दिखी असहजता

दिलचस्प बात यह रही कि बंगाल चुनाव के दौरान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जहां ममता बनर्जी के समर्थन में प्रचार कर रहे थे, वहीं उनकी ही सरकार में शामिल कांग्रेस कोटे के मंत्री और विधायक कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में प्रचार में जुटे थे। इसके बावजूद चुनाव परिणाम अपेक्षा के विपरीत रहे, जिससे गठबंधन में असहजता बढ़ी है। हालांकि, गठबंधन को लेकर अब तक किसी बड़े नेता ने खुलकर बयान नहीं दिया है, लेकिन झामुमो के महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने यह जरूर कहा है कि झामुमो के बिना कांग्रेस कुछ भी नहीं है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

नशामुक्ति राष्ट्रीय स्तर का जन-आंदोलन बने

“ कभी कभी तो ऐसी खबरें भी आती हैं कि कुछ जिलों में शराब की दुकाने स्कूलों से ज्यादा खुल गई हैं ये खबरें चिंताजनक है। हमारे नीति नियंता देश के युवा का भविष्य कहां ले जा रहें है। इन बातों को मजाक में उड़ाने की जरूरत नहीं बल्कि समाज व सरकार सबको गंभीरत से ले।

यूपी, पंजाब से लेकर तमिलनाडु तक नशा अपने पांव तेजी से पसार है। कभी कभी तो ऐसी खबरें भी आती हैं कि कुछ जिलों में शराब की दुकाने स्कूलों से ज्यादा खुल गई हैं ये खबरें चिंताजनक है। हमारे नीति नियंता देश के युवा का भविष्य कहां ले जा रहें है। इन बातों को मजाक में उड़ाने की जरूरत नहीं बल्कि समाज व सरकार सबको गंभीरत से ले। हालांकि देश को नशा मुक्त बनाने के लिए नक्सलमुक्त भारत की तर्ज पर केंद्र सरकार ने जिस नई रणनीति का खाका तैयार किया है, वह राष्ट्रीय सुरक्षा व सामाजिक स्वास्थ्य के प्रति साहसी दृष्टिकोण ही कहा जाएगा। गृह मंत्रालय व नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की ओर से संचालित ऑपरेशन वाइप इस कटु सत्य की स्वीकारोक्ति है कि नशे के विरुद्ध युद्ध केवल छोटे पेडलर्स को पकडऩे से नहीं जीता जा सकता। असली चुनौती उन अंतरराष्ट्रीय कार्टेल्स को ध्वस्त करने की है, जो भारत की सीमाओं के बाहर बैठकर इस अवैध व्यापार की डोर थामे हुए हैं। भौगोलिक दृष्टि से भारत डेथ क्रेसेंट यानी अफगानिस्तान-पाकिस्तान-ईरान और डेथ ट्रायंगल मसलन-म्यांमार-लाओस-थाईलैंड जैसे कुख्यात नार्को-गलियारों के बीच स्थित है।

इसके अलावा अब मेक्सिको-चीन नार्को-रूट भी भारतीय समुद्री मार्ग का उपयोग कर रहे हैं। आए दिन भारत पहुंचती मादक द्रव्यों की खेप इस संकट की भयावहता की पुष्टि करती है। अकेले वर्ष 25 में ही 1980 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य के नशीले पदार्थ जब्त किए गए। इसलिए यह सच है कि जब तक आपूर्ति के इन वैश्विक स्त्रोतों को जड़ से नहीं काटा जाता, घरेलू कार्रवाई महज तात्कालिक उपचार बनकर रह जाएगी। एक चिंता यह भी है कि देश में सख्त कानूनों और एजेंसियों की मुस्तैदी के बावजूद तस्करी न रुकने का बड़ा कारण इसमें लिप्त तंत्र का डिजिटलीकरण और आधुनिकीकरण है। वैश्विक परिदृश्य पर नजर डालें तो सिंगापुर जैसे देशों ने जीरो टॉलरेंस नीति और कठोर मृत्युदंड से अंतरराष्ट्रीय सप्लायरों के हौसले पस्त किए हैं। वहीं, आइसलैंड ने मांग पक्ष पर प्रहार करते हुए युवाओं को रचनात्मक और खेल गतिविधियों में इस तरह व्यस्त किया है कि समाज में नशे की चाहत ही न्यूनतम हो गई है। भारत में पंजाब हेरोइन का प्रमुख केंद्र है, गुजरात के समुद्री मार्ग नशे के प्रवेश द्वार हैं और महाराष्ट्र-कर्नाटक इसके ट्रांजिट हब हैं। पूर्वोत्तर के कुछ राज्य इस युद्ध के मुख्य मोर्चे बन गए हैं। इन प्रदेशों में सख्त निगरानी की जरूरत है। आधुनिक तस्कर अब डार्कनेट, क्रिप्टो करेंसी और ड्रोन तकनीक का उपयोग कर रहे हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

‘सरहदी राज्य’ के नारे संग चुनावी रणनीति

केवल तिवारी

बंगाल जीत से उत्साहित भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पैनी नजर अब पंजाब पर है। अकाली दल के साथ पहले भी पंजाब में सत्ता का स्वाद चख चुकी भाजपा अब यहां ‘एकला चलो’ की रणनीति पर काम कर रही है। बेशक पंजाब के सियासी शतरंज में शह-मात के खेल में गोटी फिट करना टेढ़ी खीर है, लेकिन पश्चिम बंगाल और असम जैसे ‘बॉर्डर स्टेट्स’ के बाद अब वह पंजाब के लिए ‘सरहदी राज्य का नारा’ देने की तैयारी में है। भाजपा मुख्यालय में बंगाल-असम जीत के जश्न के दौरान भी इसकी झलक मिली। दिल्ली के मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा के साथ इस जश्न में अनेक सिख नेता शामिल हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण के दौरान इन लोगों ने खूब नारे लगाए। पंजाब को लेकर भाजपा इसलिए भी उत्साहित है क्योंकि उसे यकीन है कि फिर से एकजुट हो रहे ‘इंडिया’ गठबंधन की एकता यहां नहीं रहेगी।

इस राज्य में कांग्रेस तो अकेले लड़ेगी ही, आम आदमी पार्टी (आप) सत्ता में वापसी की अलग से पूरी कोशिश करेगी। आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल कह चुके हैं कि भाजपा के विजय रथ को पंजाब रोकेगा। अकाली दल अपनी तैयारी कर ही रहा है। कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों की भी चुनाव में भूमिका होती है। ऐसे में भाजपा बिखरे विपक्ष का फायदा उठाएगी। इसी तरह का लाभ उसे बंगाल और असम में भी मिला है। चुनाव परिणाम के बाद अपनी पहली प्रतिक्रिया में दिल्ली के पूर्व सीएम केजरीवाल ने दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी के लिए ये आखिरी विजय है। साथ ही उन्होंने यह भी दावा किया कि पंजाब के बाद मोदी सरकार गिर जाएगी। आप से भाजपा में गए राज्यसभा सदस्यों का जिक्र करते हुए केजरीवाल ने कहा कि मोदी सरकार ने पंजाबियों की इन सीटों को लूटा है। पश्चिम बंगाल की निवर्तमान मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी ने पहली प्रतिक्रिया में आरोप लगाया कि भाजपा ने सौ सीटों की लूट की है। इसी तरह सपा प्रमुख अखिलेश यादव एवं लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी चुनाव में सीट चोरी का आरोप लगाया है।

वह मोदी के खिलाफ अक्सर ऐसे ही शब्द का इस्तेमाल करते हैं। इस बीच, भाजपा नेताओं ने 2027 में होने वाले पंजाब विधानसभा चुनावों में पश्चिम बंगाल में मिली सफलता को दोहराने की उम्मीद जताई है। भाजपा के रणनीतिकार सरहदी राज्य की सुरक्षा, नशा जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठा रहे सरहदी राज्य में हिंसा की छिटपुट वारदातें हो रही हैं। दो समुदायों के बीच संघर्ष को सुलझाने का काम भाजपा सरकार नहीं कर पाई है। मणिपुर को लेकर कांग्रेस अनेक बार भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधती रही है। काबिल-ए-गौर है कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश, गुजरात, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा में भाजपा की सरकार है, जबकि पंजाब में आप और हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस सत्ता में है। भाजपा ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में 207 सीटें जीतकर दो-तिहाई से अधिक बहुमत हासिल कर इतिहास रच दिया।

हैं। वैसे पंजाब के अलावा अगले साल गुजरात, गोवा, मणिपुर, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में भी चुनाव हैं, लेकिन भाजपा के लिए पंजाब प्रमुख है। पार्टी यहां अपना वर्चस्व बनाकर एक संदेश देने की कोशिश में है। अन्य राज्यों में भी भाजपा की तैयारी जोरों पर है। पार्टी अध्यक्ष नितिन नबीन जमीनी स्तर पर काम कर रहे हैं। इन राज्यों में पार्टी पदाधिकारियों की विभिन्न बैठकों में भाग ले चुके नबीन अब पीएम और गृह मंत्री अमित शाह के साथ चर्चा कर रहे हैं। इन राज्यों के साथ ही भाजपा उत्तराखंड के लिए भी जोरशोर से जुट गयी है। उत्तराखंड, गुजरात भी एक तरह से सरहदी राज्य हैं। उत्तराखंड में जहां चीन और नेपाल की सीमाएं लगती हैं, वहीं गुजरात का एक हिस्सा पाकिस्तान सीमा से सटा है। पंजाब भी पाकिस्तान सीमा से सटा है। मणिपुर राज्य भी म्यांमार से सटा है और यहां कुछ समय तक अशांति रही। हालांकि अभी भी इस यहां उसने तृणमूल कांग्रेस के 15 साल के शासन का अंत कर दिया। असम में सत्तारूढ़ राजग दो-तिहाई बहुमत हासिल करने के बाद लगातार तीसरी बार राज्य में सत्ता में लौटा है।

भाजपा ने 82 सीट पर जीत हासिल की जबकि उसके सहयोगी दलों- बोडो पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) और असम गण परिषद (एजीपी) को 10-10 सीट पर जीत मिली है। राज्य में भाजपा ने पहली बार अपने दम पर बहुमत हासिल किया है। भारत के ज्यादातर राज्यों में काबिज हो चुकी भाजपा या राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) अब पूरा जोर पंजाब पर लगाएगी। उधर, हालिया हार के बाद इंडिया गठबंधन एकजुट होने की एक बार फिर कोशिश कर रहा है। अब देखना होगा कि पंजाब में भाजपा अपने पूर्व सहयोगी शिरोमणि अकाली दल के साथ फिर से मैदान में उतरने की कोशिश करती है या फिर इस राज्य में भी वह कोई नया प्रयोग करेगी।

तेजाब और पितृसत्ता के बीच संघर्ष करती स्त्री

डॉ. रितु सारस्वत

हाल ही में देश के शीर्ष न्यायालय ने ‘शाहीन मलिक बनाम भारत संघ’ मामले में एसिड अटैक के संबंध में मौजूदा कानूनों के तहत तेजाब हमलों से जुड़े मामलों के निस्तारण को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की। अदालत ने माना कि ऐसे अपराधों के लिए निर्धारित दंड पर्याप्त नहीं हैं तथा कई पीड़ित अब भी उचित कानूनी पहचान और सहायता से वंचित हैं। सुनवाई के दौरान न्यायालय ने विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 के प्रावधानों की भी समीक्षा की। अदालत ने पाया कि अधिनियम की वर्तमान अनुसूची में तेजाब हमले के पीड़ितों को केवल उन व्यक्तियों तक सीमित रखा गया है जो ‘एसिड या इसी तरह के संहारक पदार्थ फेंकने से हुए हिंसक हमलों के कारण विकृत हो गए हैं।’

न्यायालय ने केंद्र सरकार से अनुसूची में संशोधन कर ऐसे मामलों को शामिल करने पर विचार करने को कहा। सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा, ‘यदि इस संशोधन को अधिसूचित किया जाता है तो हम इसकी सराहना करेंगे।’ यही नहीं पीठ ने तेजाब की सहज उपलब्धता और उसकी अवैध बिक्री पर भी गंभीर चिंता जताई और कहा कि अवैध रूप से तेजाब बेचने वाले विक्रेताओं को जिम्मेदारी से बचने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए तथा ऐसे मामलों में उनकी जवाबदेही भी सुनिश्चित होनी चाहिए। न्यायालय ने यह भी संकेत दिया कि दायित्व केवल हमलावर तक सीमित नहीं रहना चाहिए। सुनवाई के दौरान अपराधियों पर कठोर आर्थिक दंड लगाने और उनकी संपत्ति जब्त करने जैसे उपायों पर भी चर्चा हुई। अदालत ने टिप्पणी की, ‘हमलावर की संपत्ति, जिसमें संयुक्त हिंदू परिवार की संपत्ति में उसका हिस्सा भी शामिल है, क्यों न जब्त की जाए? हम आत्मसम्मान आदि की बात करते हैं... तो आरोपी को क्यों नहीं भुगतना चाहिए?’ एसिड अटैक मानवता के मुंह पर वह तमाचा है, जहां सभ्यता, संस्कृति और संवेदनाएं एक साथ दम तोड़ती दिखाई देती हैं। ऐसे अपराध केवल किसी एक व्यक्ति पर हमला नहीं होते, बल्कि वे पूरे समाज की चेतना और नैतिकता को कठघरे में खड़ा कर देते हैं।

विशेष रूप से वे लोग भी प्रश्नों के घेरे में आ जाते हैं, जो इस हिंसा के विरुद्ध बोलने का साहस नहीं जुटा पाते। बिना किसी अपराध के जीवनभर असहनीय पीड़ा सहना केवल शारीरिक या मानसिक यातना भर नहीं है। यह उस धीमे ज़हर की तरह है, जिसमें पीड़िता हर दिन जीते हुए स्वयं को अपराधबोध, उपेक्षा और सामाजिक असहजता के बीच घिरा हुआ पाती है। विडंबना यह है कि तेजाब का प्रभाव केवल शरीर को नहीं जलाता, बल्कि वह व्यक्ति के आत्मविश्वास, संबंधों और जीवन के प्रति विश्वास को भी भीतर तक झुलसा देता है। यदि हम यह सोचते हैं कि ऐसी कुंठित मानसिकता केवल भारत तक सीमित है, तो यह हमारी गंभीर भूल होगी। स्त्री को अस्वीकार किए जाने, नियंत्रण खो देने या आहत अहंकार के प्रतिशोध में हिंसा का शिकार बनाना दरअसल संपूर्ण विश्व की एक सामाजिक बीमारी है।

पुरुष अक्सर स्त्री की ‘न’ को स्वीकार नहीं कर पाता। जब उसका अहंकार घायल होता है, तब वह शक्ति, भय, हिंसा या नियंत्रण के माध्यम से स्त्री पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। और जब वह ऐसा करने में असफल होता है, तब कई बार प्रतिशोध सबसे क्रूर रूप में सामने आता है। नारीवादी चिंतक बेल हुक्स पितृसत्ता को ऐसी व्यवस्था मानती हैं, जो पुरुष को यह विश्वास दिलाती है कि प्रभुत्व उसका स्वाभाविक अधिकार है। वहीं मनोवैज्ञानिक लंडी बैनक्रॉफ्ट अपनी पुस्तक ‘व्हाय डज ही डू दैट?’ में लिखते हैं कि हिंसा केवल क्षणिक क्रोध का परिणाम नहीं होती, बल्कि उसके मूल में स्वामित्व, अधिकारबोध और नियंत्रण की मानसिकता छिपी होती है। यही कारण है कि जब कोई स्त्री अपनी स्वतंत्र इच्छा से निर्णय लेती है, असहमति जताती है या किसी संबंध को अस्वीकार करती है, तब पुरुषवादी अहंकार कई बार उसे दंडित करने पर उतारू हो जाता है। इन तमाम असहनीय यातनाओं और सामाजिक उपेक्षाओं के बीच जो बात सबसे अधिक चकित करती है, वह है एसिड अटैक सर्वाइवर्स की अदम्य जिजीविषा। उनकी जिजीविषा पितृसत्तात्मक मानसिकता को आईना दिखाती है। जिन लोगों ने उन्हें तोड़ने, डराने और जीवनभर के लिए समाप्त कर देने का प्रयास किया, वे उनके शरीर को तो घायल कर पाए, पर उनकी आत्मा, उनका साहस और जीने की इच्छा को समाप्त नहीं कर सके। शायद यही उन अपराधियों की सबसे बड़ी हार है कि जिन स्त्रियों को वे भय और पीड़ा के अंधेरे में धकेल देना चाहते थे, वही स्त्रियां आज संघर्ष, आत्मसम्मान और साहस की सबसे मजबूत आवाज बनकर खड़ी हैं।

भारतीय एसिड अटैक सर्वाइवर रेशमा कुरैशी इसका एक सशक्त उदाहरण हैं। जिस लड़की के चेहरे को तेजाब से मिटा देने की कोशिश की गई थी, वही रेशमा बाद में न्यूयॉर्क फैशन वीक के रैंप तक पहुंचीं। यह केवल एक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि उस मानसिकता के विरुद्ध एक शांत किंतु दृढ़ प्रतिरोध था, जो किसी स्त्री की पहचान को उसके चेहरे तक सीमित समझती है। कुछ ऐसी ही कहानी ब्रिटेन की केटी पाइपर की भी है। एक भयावह एसिड अटैक के बाद लंबे समय तक शारीरिक और मानसिक पीड़ा से गुजरने वाली केटी ने स्वयं को केवल एक पीड़िता के रूप में सीमित नहीं होने दिया। अनेक सर्जरी, सामाजिक भय और आत्मसंघर्ष के बाद उन्होंने अपने अनुभवों को लेखन और सामाजिक जागरूकता का माध्यम बनाया। उनकी पुस्तक ‘ब्यूटीफुल’ केवल एक आत्मकथा नहीं, बल्कि उस स्त्री की आंतरिक यात्रा है।

खर्राटे का असर

जब बच्चा खर्राटे लेता है, तो इसका मतलब है कि उसे सांस लेने के लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ रही है। इससे बच्चे की रात की नींद पूरी नहीं होती, जिसका सीधा असर उसकी दिनचर्या पर पड़ता है। ऐसे बच्चे दिनभर चिड़चिड़े रहते हैं, उन्हें स्कूल में पढ़ाई के दौरान ध्यान केंद्रित करने में परेशानी होती है और खेल-कूद में भी वे जल्दी थक जाते हैं। नींद की कमी उनके मानसिक और शारीरिक विकास को प्रभावित कर सकती है। सोते वक्त आने वाले खर्राटे आपके साथ-साथ कई लोगों के लिए परेशानी का सबब बन सकते हैं। यह बहुत ही आम बात मानी जाती है। हर घर में ऐसा कोई सदस्य जरूर होता है, जो रात को सोते समय खर्राटे लेता है। खर्राटे की समस्या वयस्कों में हो तो गंभीर नहीं मानी जाती है, लेकिन अगर यह आपका बच्चा कर रहा है, तो सावधानी की जरूरत है। बच्चों में होने वाले खर्राटे की समस्या को ऑब्स्ट्रक्टिव स्लीप एपनिया कहा जाता है।

यह एक स्वास्थ्य समस्या है। कई बार माता-पिता इसे जेनेटिक समस्या मान लेते हैं, जैसे कि इसके पिता भी खर्राटे लेते हैं, इसलिए यह भी ले रहा है। खर्राटे लेना और वजन का बढ़ना आपस में गहराई से जुड़े हो सकते हैं।

छोटे बच्चों का खर्राटा लेना सामान्य नहीं

खर्राटों का मोटापे से संबंध

छोटे बच्चों में खर्राटों के कुछ सामान्य मेडिकल कारण हैं, जिनमें एलर्जिक राइनाइटिस, एडिनोइड्स और टॉन्सिल हाइपरट्रॉफी प्रमुख कारण है। इसके अलावा, कुछ प्रतिशत बच्चों में मोटापा भी खर्राटों की एक बड़ी वजह बनता है। शरीर की अतिरिक्त चर्बी श्वसन मार्ग पर दबाव डालती है, जिससे सांस लेने में दिक्कत होती है। इसलिए बच्चे के वजन को नियंत्रित रखना भी खर्राटों के इलाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अक्सर ऐसा देखने को मिलता है कि माता-पिता बच्चों के खर्राटे लेने को नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक यह एक स्वास्थ्य समस्या है। कई बार माता-पिता इसे जेनेटिक समस्या मान लेते हैं, जैसे कि इसके पिता भी खर्राटे लेते हैं, इसलिए यह भी ले रहा है। खर्राटे लेना और वजन का बढ़ना आपस में गहराई से जुड़े हो सकते हैं। अगर बच्चा नियमित रूप से खर्राटे लेता है, तो इसका सीधा मतलब है कि उसके श्वसन मार्ग में कोई रुकावट है, जिसे समय रहते पहचानना और इलाज करना जरूरी है। नाक से लेकर फेफड़ों तक जाने वाले हवा के रास्ते में जब भी कोई बाधा आती है, तो हवा उसके विरुद्ध टकराती है और ध्वनि उत्पन्न होती है, जिसे हम खर्राटा कहते हैं। सर्दी-जुकाम के दौरान म्यूकस (बलगम) जमा होने से 2-3 हफ्ते नाक बजना सामान्य है, क्योंकि बच्चे इसे बाहर नहीं निकाल पाते। लेकिन अगर बच्चा स्वस्थ होने पर भी रोज खर्राटे लेता है, तो यह टॉन्सिल्स या श्वसन तंत्र के सॉफ्ट टिश्यू मास में वृद्धि का संकेत हो सकता है।

समय पर इलाज है संभव

खर्राटों की समस्या को इग्नोर नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसे पूरी तरह ठीक किया जा सकता है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने डॉक्टर से मिलें और बच्चे के सभी लक्षणों जैसे रात में सांस लेने का तरीका, दिन की सुस्ती और वजन के बारे में खुलकर चर्चा करें। सही समय पर डायग्नोसिस होने से बच्चा न केवल चैन की नींद सो पाएगा, बल्कि उसकी एकाग्रता और स्वास्थ्य में भी सुधार होगा।

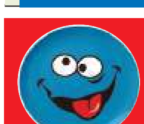

हंसना मना है

हम हमेशा दो लोगों के लिए अगरबत्ती लगाते हैं, एक भगवान के लिए, उन्हें बुलाने के लिए.. और दूसरी अगरबत्ती मच्छर के लिए, उन्हें भगाने के लिए.. पर होता उसके बिलकुल उलटा है.. भगवान आते नहीं है और, मच्छर हैं कि जाते नहीं है।

डॉक्टर: अब आप खतरे से बाहर है, फिर भी आप इतना क्यों डर रहे हो? मरीज: जिस ट्रक से मेरी दुर्घटना हुई थी, उसपे लिखा था, फिर मिलेंगे।

डॉक्टर: जब आपको पता था, छिपकली आपके नाक में जा रही है, तो आपने रोका क्यों नहीं? पेशंट: पहले कॉकरोच गया था, मैंने सोचा उसे पकड़ने जा रही होगी।

वाईफ: सुबह मेरे चेहरे पे पानी क्यों डाला? हसबैंड: तेरे बाप ने कहा था, मेरी बेटी फुल की तरह है इसे मुरझाने मत देना।

पप्पू का इंटरव्यू: बताओ वो कौन सी औरत हैं जिसको 100 प्रतिशत पता होता हैं की उसका हसबैंड कहां हैं? पप्पू ने अपना खतरनाक दिमाग लगाया और बोला, विधवा औरत।

विणा अपने पति से- तुम सच में बहुत सीधे साधे और भोले हो, तुम्हें कोई भी आसानी से बेवकूफ बना सकता है। पति- सच कह रही हो, शुरुवात तो तुम्हारे पापा ने ही की है।

कहानी: राजा की सम्यक दृष्टि

एक बहुत प्रभावशाली, बुद्धि और वैभव से संपन्न राजा था। आस-पास के राजा भी समय-समय पर उससे परामर्श लिया करते थे। एक दिन राजा सोचने लगा कितना विशाल है मेरा परिवार, कितनी मजबूत है मेरी सेना, कितना बड़ा है मेरा राजकोष। ओह! राजा कवि हृदय था। अपने भावों को उसने शब्दों में पिरोना शुरू किया। चौथी लाइन पूरी नहीं हो रही थी। राजा के बार-बार गुनगुनाने पर भी चौथा-चरण बन नहीं रहा था। उसी रात एक चोर राजमहल में चोरी करने के लिए आया था। चोर भी संस्कृत भाषा का विज्ञ और आशु कवि था। राजा द्वारा गुनगुनाए जाते श्लोक के तीन चरण चोर ने सुन लिए। उस चोर का कवि मन भी मचलने लगा। अगली बार राजा ने जैसे ही वे तीन लाइनें पूरी कीं, चोर के मुंह से चौथी लाइन निकल पड़ी, चोर की इस एक पंक्ति ने राजा की आंखें खोल दीं। उसने चारों ओर देखा ऐसी ज्ञान की बात किसने कही? उसने आवाज दी, पलंग के नीचे जो भी है, वह मेरे सामने उपस्थित हो। चोर हाथ जोड़ कर राजा से बोला, हे राजन! मैं आया तो चोरी करने था, पर आप के द्वारा पढ़ा जा रहा श्लोक सुनकर यह भूल गया कि मैं चोर हूं। हे राजन! मैं अपराधी हूं। मुझे क्षमा कर दें। राजा ने कहा, तुम अपने जीवन में चाहे जो कुछ भी करते हो, इस क्षण तो तुम मेरे गुरु हो। गुरु होने के कारण तुम मुझसे जो चाहो मांग सकते हो। राजा ने कहा, आज मेरे ज्ञान की आंखें खुल गईं। इसलिए मैं शीघ्र ही संन्यास लेना चाहता हूं। राज्य अब तृण के समान प्रतीत हो रहा है। तुम यदि मेरा राज्य चाहो तो मैं उसे सहर्ष देने के लिए तैयार हूं। चोर बोला, राजन! आपको जैसे इस वाक्य से बोध पाठ मिला है, वैसे ही मेरा मन भी बदल गया है। मैं भी संन्यास स्वीकार करना चाहता हूं। राजा और चोर दोनों संन्यासी बन गए। एक ही पंक्ति ने दोनों को स्पंदित कर दिया। यह है सम्यक दृष्टि का परिणाम। जब तक राजा की दृष्टि सम्यक नहीं थी, वह धन-वैभव, भोग-विलास को ही सब कुछ समझ रहा था। ज्यों ही आंखों से रंगीन चश्मा उतरा, दृष्टि सम्यक बनी कि पदार्थ पदार्थ हो गया और आत्मा आत्मा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

नौकरी में प्रभाव वृद्धि होगी। बिगड़े काम बनेंगे। निवेश मनोनुकूल लाभ देगा। सामाजिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। विरोध होगा।

वृषभ

राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे। कारोबार में वृद्धि होगी। निवेश लाभ देगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। बिगड़े काम बनेंगे।

मिथुन

किसी व्यक्ति की बातों में न आएं। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। वाहन, मशीनरी व अग्नि के प्रयोग में सावधानी रखें।

कर्क

राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। व्यापार में वृद्धि होगी। स्त्री वर्ग से समयानुकूल सहायता प्राप्त होगी। नौकरी में उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

सिंह

आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। कर्ज समय पर चुका पाएंगे। बैंक-बैलेंस बढ़ेगा। स्थायी संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। मनपसंद रोजगार मिलेगा।

कन्या

यात्रा लाभदायक रहेगी। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। किसी प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। किसी मांगलिक कार्य का आयोजन हो सकता है।

तुला

व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। आय में निश्चितता रहेगी। शत्रु शांत रहेंगे। बुरी खबर मिल सकती है, धैर्य रखें। दौड़धूप की अधिकता का स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा।

वृश्चिक

थोड़े प्रयास से ही कार्यसिद्धि होने से प्रसन्नता रहेगी। निवेश से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेंगे। आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलने से खिन्नता रहेगी।

धनु

शुभ समाचार प्राप्त होंगे। प्रसन्नता रहेगी। बिछड़े मित्र व संबंधी मिलेंगे। विरोधी सक्रिय रहेंगे। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। व्यापार मनोनुकूल चलेगा।

मकर

व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। रोजगार मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट मनोनुकूल लाभ देगा। बुद्धि का प्रयोग करें।

कुम्भ

नौकरी में कार्यभार रहेगा। थकान महसूस होगी। आंखों का विशेष ध्यान रखें। चोट व रोग से बचाएं। पुराना रोग उभर सकता है। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

मीन

रुका हुआ धन प्राप्त होगा। प्रयास सफल रहेंगे। बुद्धि का प्रयोग करें। प्रमाद न करें। निवेश से लाभ होगा। यात्रा मनोनुकूल रहेगी। कारोबार से संतुष्टि रहेगी।

प्रभास स्टारर 'कल्कि 2' में दिखेगा सिनेमा का सबसे बड़ा क्लैश

प्रभास स्टारर 'कल्कि 2898 एडी' की जबरदस्त सफलता के बाद अब मेकर्स इसके अगले पार्ट की तैयारी में जुट गए हैं। पहले पार्ट के बाद से ही फैंस इसके अगले हिस्से का इंतजार कर रहे हैं। नाग अश्विन की इस बड़े साइंस-फिक्शन यूनिवर्स की अगली फिल्म 'कल्कि 2' पर तेजी से काम चल रहा है और रिपोर्ट्स के मुताबिक इसे दिसंबर 2027 में थिएटर्स में रिलीज किया जा सकता है। पिंकविला की रिपोर्ट के अनुसार, फिल्म की कहानी वहीं से आगे बढ़ेगी जहां पहला पार्ट खत्म हुआ था। इस बार फिल्म में भविष्य की दुनिया और पौराणिक संघर्ष को और बड़े लेवल पर दिखाया जाएगा।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, 'कल्कि 2' की शूटिंग का बड़ा हिस्सा अगले साल अप्रैल तक पूरा कर लिया जाएगा। प्रभास, अमिताभ बच्चन, कमल हासन और साई पल्लवी तब तक अपने हिस्से की शूटिंग खत्म कर सकते हैं।

सूत्रों के अनुसार, फिल्म में भारी VFX और बड़े स्तर की वर्ल्ड बिल्डिंग होने की वजह से मेकर्स पोस्ट-प्रोडक्शन पर काफी समय देने वाले हैं। बताया जा रहा है कि 'कल्कि 2' का स्केल पहले पार्ट से भी ज्यादा बड़ा होगा। फिल्म में प्रभास के कई बड़े और दमदार एक्शन सीक्वेंस देखने को मिलेंगे, जिसकी तैयारी अभी से शुरू हो चुकी है।

'सुप्रीम यास्किन' भी है। पहले पार्ट में उनकी झलक ने दर्शकों को काफी एक्साइटेड कर दिया था और अब दूसरे पार्ट में उनका रोल और भी ज्यादा अहम होने वाला है।

नाग अश्विन द्वारा लिखित और निर्देशित इस फ्रेंचाइजी को वैजयंती मूवीज प्रोड्यूस कर रही है। प्रभास, अमिताभ बच्चन, कमल हासन और साई पल्लवी जैसे बड़े सितारों के साथ 'कल्कि 2' पहले से ही 2027 की सबसे चर्चित भारतीय फिल्मों में शामिल हो चुकी है।

राजा शिवाजी का असली बजट तो निर्माता ही जानता है : रितेश

रितेश देशमुख इन दिनों अपनी नई रिलीज फिल्म 'राजा शिवाजी' को लेकर चर्चाओं में हैं। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर रही है। मराठी भाषा में फिल्म को काफी पसंद किया जा रहा है। फिल्म की रिलीज के समय इस मल्टीस्टारर फिल्म का बजट 100 करोड़ रुपए बताया जा रहा था। अब रितेश देशमुख ने खुद फिल्म के बजट को लेकर खुलासा किया है। साथ ही उन्होंने फिल्म के 100 करोड़ रुपए के बजट की खबरों पर भी प्रतिक्रिया दी है। रितेश देशमुख ने 'राजा शिवाजी' के बजट को लेकर बात की। जब उनसे पूछा गया कि क्या फिल्म निर्माता होने के नाते उन पर फिल्म की बड़ी ओपनिंग का दबाव होता है, क्योंकि लोग इसके बड़े बजट की चर्चा कर रहे हैं। इस पर रितेश ने कहा कि 'राजा शिवाजी' के बजट को लेकर जो

आंकड़े सामने आ रहे हैं, उनका असली बजट तो सिर्फ निर्माता ही जानते हैं। फिल्म निर्माता के तौर पर हमें फिल्म के बजट पर चर्चा करने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है, क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आज के इंडस्ट्री में एक्टर्स की फीस और बजट को लेकर होने वाली चर्चा अनावश्यक रूप से केंद्र बन गई है।

रितेश ने सवाल उठाते हुए कहा कि बजट से क्या लेना-देना है? अगर कोई मुझसे बजट पूछता है, तो मैं उनसे पूछता हूं, आप फिल्म देखने के लिए टिकट पर कितना खर्च कर रहे हैं? वे कहते हैं, 100, 250 या 300 रुपए। मैं जवाब देता हूं कि यही बजट है। इस बारे में बात करना बंद कर देना चाहिए। इसे जादुई होने दो, बस जाओ और फिल्म का अनुभव करो।

रितेश ने आगे थिएटर में फिल्में देखने के अपने बचपन के अनुभवों को याद किया। उन्होंने बताया कि जब मैं बचपन में अमिताभ बच्चन की फिल्में, जैसे शोले, देखने जाता था, तो मैं कभी नहीं सोचता था कि इसका बजट क्या है? मैं बस बड़े पर्दे का मनोरंजन चाहता था। हमने कभी अपनी फिल्मों के बजट को सार्वजनिक नहीं किया।

अभिनेता का मानना है कि फिल्मों के आंकड़ों को लेकर लोगों की जिज्ञासा को बढ़ावा देने के लिए खुद फिल्म इंडस्ट्री ही जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि हमें कभी पता नहीं चलता कि फिल्मों ने कितना कलेक्शन किया। दुर्भाग्य से आज यही चलन है।

लोग सोचते हैं कि एक्टर्स फिल्मों के लिए कितनी फीस लेते हैं? यह हमारी गलती है, हम ही इन आंकड़ों को हवा देते हैं। जिन्हें लगता है कि यह सही है, ठीक है। हमने अब तक मराठी में सात फिल्में बनाई हैं, हमने कभी भी अपनी फिल्मों का बजट सार्वजनिक नहीं किया है। 'राजा शिवाजी' के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन की बात करें तो फिल्म को रिलीज हुए एक हफ्ते से ज्यादा वक्त हो गया है। सैकनिल्क के मुताबिक, 'राजा शिवाजी' ने आठ दिनों में 55.85 करोड़ रुपए की कमाई कर ली है।

बॉलीवुड | **मन की बात**

पीआर टीमों को पैसे देकर नं.1 बनती हैं कुछ एक्ट्रेस : अमीषा

कई बॉलीवुड एक्टर्स की पीआर टीम हमेशा सक्रिय रहती है। वह एक्टर फिल्में करे या ना करे। उसकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो जाएं, तब भी वह लाइमलाइट में बना रहता है। कई एक्टर्स और एक्ट्रेसेस को नंबर वन के टैग भी मिलते रहते हैं। यह सब कहीं ना कहीं पीआर गेम का नतीजा है, ऐसा अमीषा पटेल का मानना है। हाल ही में अपने ट्विटर अकाउंट पर अमीषा ने बॉलीवुड के फेक पीआर गेम पर खुलकर बात की है। अमीषा पटेल ने शक्रवार देर रात एक ट्वीट करते हुए लिखा, 'ज्यादातर ऐसी एक्ट्रेसेस हैं, जिन्होंने अपने करियर में एक भी ऐसी फिल्म नहीं की है जिसने बॉक्स ऑफिस पर 200 करोड़ से ज्यादा की कमाई की हो। लेकिन वो अपनी पीआर टीमों को पैसे देकर खुद को नंबर 1 और नंबर 2 कहलवा रही हैं? सच में? यह 2026 है, 2000 नहीं। आज के जमाने में 100 करोड़ तो कुछ भी नहीं हैं।' आगे एक ट्वीट और अमीषा पटेल ने किया। इसमें वह लिखती हैं, 'फिल्म 'कहो ना प्यार है, गदर 1 या गदर 2 एक नहीं, बल्कि हीरोइन के तौर पर मैंने 3 सबसे बड़ी सोलो ब्लॉकबस्टर फिल्में दी हैं, जिनमें तीनों ही फिल्मों को सबसे ज्यादा दर्शक मिले। आज भी, ये फिल्में मेरे को-स्टार्स के करियर की भी सबसे बड़ी हिट फिल्में हैं। लेकिन दूसरी एक्ट्रेसेस के मुकाबले मेरी फेक पीआर मशीनरी कमजोर है।' अमीषा पटेल ने अपने करियर और फ्यूचर प्रोजेक्ट्स के बारे में भी फैंस को सोशल मीडिया के जरिए बताया। वह एक ट्वीट में लिखती हैं, 'फिल्म 'गदर 3' पक्का आएगी और जब आएगी तो थिएटर में हंगामा मच जाएगा। दर्शकों के प्यार और भगवान के आशीर्वाद से 'गदर' जैसे बड़े ब्रांड की फिल्म बॉक्स ऑफिस पर 500 करोड़ तो कम से कम कमाएगी। इस बार इसका स्केल और स्क्रिप्ट, दोनों ही और भी ज्यादा बड़े और जबरदस्त होंगे। तैयार रहिए।'

दुनिया का इकलौता देश जहां नहीं है एक भी गांव, कभी थे 200 से ज्यादा!

दुनिया के किसी भी देश की असली पहचान उसकी संस्कृति से होती है, और इस संस्कृति की जड़ं अक्सर गांवों में ही देखने को मिलती हैं। भारत जैसे देशों में गांव आज भी परंपरा, सादगी, आपसी प्रेम और प्रकृति से जुड़ाव का जीवंत उदाहरण हैं। यहां खेती-किसानी के साथ सामूहिक जीवनशैली साफ तौर पर नजर आती है। यही वजह है कि दुनिया के ज्यादातर देशों चाहे वह अमेरिका हो, चीन या भारत सभी में ग्रामीण क्षेत्र आज भी मौजूद हैं, जहां लोग अपनी पारंपरिक जीवनशैली के साथ रह रहे हैं। मगर एक देश ऐसा भी है, जहां आपको पारंपरिक गांव या ग्रामीण इलाका देखने को नहीं मिलेगा। यह देश है सिंगापुर, जिसे सिटी-स्टेट यानी शहर-राज्य के रूप में जाना जाता है। सिंगापुर पूरी तरह से शहरी देश है, जहां हर कोना आधुनिक सुविधाओं और विकसित इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ा हुआ है। यहां न तो खेत-खलिहान नजर आते हैं और न ही पारंपरिक गांवों की झलक मिलती है। हालांकि, सिंगापुर हमेशा से ऐसा नहीं था। इतिहास पर नजर डालें तो यह देश कभी छोटे-छोटे मछुआरों के गांवों से बना था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 1970 के दशक तक यहां 200 से अधिक गांव मौजूद थे। उस समय यहां की आबादी का एक बड़ा हिस्सा इन्हीं ग्रामीण इलाकों में रहता था और पारंपरिक जीवन जीता था। सिंगापुर के तेजी से बदलते स्वरूप के पीछे उसकी रणनीतिक स्थिति और योजनाबद्ध विकास की बड़ी भूमिका रही है। 19वीं सदी में जब यह ब्रिटिशों के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक चौकी बना, तभी से यहां विकास की रफ्तार तेज हो गई। प्रमुख समुद्री मार्गों के पास स्थित होने के कारण सिंगापुर जल्द ही एक प्रमुख व्यापारिक और आर्थिक केंद्र बन गया है। जमीन की सीमित उपलब्धता सिंगापुर के सामने एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन सरकार ने इस चुनौती को अवसर में बदलते हुए योजनाबद्ध शहरीकरण को अपनाया। गांवों को धीरे-धीरे खत्म कर उनकी जगह ऊंची-ऊंची इमारतें, आधुनिक अस्पताल, स्कूल और अन्य बुनियादी सुविधाएं विकसित की गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज सिंगापुर दुनिया के सबसे विकसित और सुव्यवस्थित देशों में गिना जाता है। 2026 तक आते-आते सिंगापुर ने खुद को एक जिम्मेदार और आधुनिक राष्ट्र के रूप में स्थापित कर लिया है। यहां की जीवनशैली, साफ-सफाई, बेहतर सार्वजनिक सुविधाएं और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर इसे बाकी देशों से अलग बनाते हैं।

अजब-गजब | **इसे कहा जाता है दुनिया का सबसे बड़ा किताब चोर**

इस चोर ने 45 राज्यों की लाइब्रेरियों को किया खाली

दुनिया में आपने कई तरह के चोरों के बारे में सुना होगा। कोई पैसों के पीछे भागता है, कोई सोना-चांदी चुराता है, तो कोई महंगी कारों पर हाथ साफ करता है। लेकिन क्या आपने कभी ऐसे इंसान के बारे में सुना है, जिसने सिर्फ किताबों के लिए अपनी पूरी जिंदगी दांव पर लगा दी? यह कहानी है अमेरिका के स्टीफन ब्लमबर्ग की, जिसे किताबों से ऐसा जुनून था कि उसने एक-दो नहीं, बल्कि हजारों दुर्लभ किताबें लाइब्रेरियों से गायब कर दीं। उसकी कहानी किसी फिल्मी किरदार से कम नहीं लगती। लोग उसे बुक थीफ कहते थे, लेकिन वह खुद को किताबों का असली रक्षक मानता था। उसकी सोच अजीब थी, लेकिन उसी सोच ने उसे इतिहास का सबसे बड़ा किताब चोर बना दिया।

स्टीफन ब्लमबर्ग ने 1970 से 1990 के बीच अमेरिका और कनाडा की सैकड़ों लाइब्रेरियों को अपना निशाना बनाया। उसने उत्तरी अमेरिका के 45 राज्यों और कनाडा की 268 लाइब्रेरियों से दुर्लभ और कीमती किताबें चुराईं। ये कोई साधारण किताबें नहीं थीं। इनमें कई ऐतिहासिक दस्तावेज, पुरानी पांडुलिपियां और बेहद दुर्लभ संस्करण शामिल थे, जिनकी कीमत करोड़ों रुपये बताई जाती है। सबसे हैरान करने वाली बात यह थी कि उसने इन किताबों को बेचने की कोशिश कभी नहीं की। वह उन्हें अपने घर में संभालकर रखता था। पुलिस जब उसके घर पहुंची तो वहां बाथरूम, किचन, बेडरूम और दीवारों तक पर किताबें भरी हुई थीं। ब्लमबर्ग कोई आम चोर नहीं था। वह पूरी प्लानिंग के साथ काम करता था। पहले दिन में लाइब्रेरी जाकर पूरे भवन का नक्शा समझता, सुरक्षा व्यवस्था पर नजर रखता और फिर रात में चोरी करता था। उसने कई नकली पहचान पत्र बनवा रखे थे। कई बार तो वह लाइब्रेरी स्टाफ की चाबियां तक चुरा लेता था। उसकी चालाकी इतनी ज्यादा थी कि सालों तक कोई उसे पकड़ ही नहीं पाया। स्टीफन बचपन से ही लोगों से कम और किताबों से ज्यादा जुड़ा रहता था। बाद में डॉक्टरों ने उसमें स्किजॉइड पर्सनैलिटी डिसऑर्डर जैसी मानसिक स्थिति होने की बात कही। उसे लगता था कि बड़ी संस्थाएं इन दुर्लभ किताबों की सही देखभाल नहीं कर रहीं। इसलिए वह खुद को उनका रक्षक मानने लगा। यही सोच धीरे-धीरे उसे अपराध की दुनिया में ले गई। हर अपराध की तरह ब्लमबर्ग की कहानी का अंत भी अचानक हुआ। उसका राज उसके अपने साथी केनेथ रोड्स ने खोला। लालच में आकर उसने स्नक्क को सारी जानकारी दे दी। कई रिपोर्टस् के मुताबिक, 20 मार्च 1990 को पुलिस ने जब उसके घर पर छापा मारा, तो अधिकारी दंग रह गए। घर में करीब 23,600 किताबें मिलीं, जिनका कुल वजन लगभग 19 टन था।

1991 में स्टीफन ब्लमबर्ग को दोषी करार दिया गया और उसे 71 महीने की जेल की सजा सुनाई गई। हालांकि जेल से बाहर आने के बाद भी उसका नाम इतिहास में दुनिया के सबसे बड़े किताब चोर के रूप में दर्ज हो चुका था। आज भी उसकी कहानी लोगों को हैरान करती है। कोई उसे जुनूनी बुक लवर मानता है, तो कोई बेहद चालाक चोर। लेकिन एक बात तय है, किताबों के लिए ऐसा पागलपन दुनिया में बहुत कम देखने को मिलता है।

मोदी सरकार के खोखले दावों के 12 साल: खरगे

» एनसीआरबी के आंकड़े पर कांग्रेस अध्यक्ष ने उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला करते हुए आरोप लगाया कि उसके बारह वर्षों के शासन ने कानून-व्यवस्था और महिला सुरक्षा के संबंध में किए गए दावों की खोखली सच्चाई उजागर कर दी है। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो (एनसीआरबी) की एक रिपोर्ट के आंकड़ों का हवाला देते हुए खर्गे ने दावा किया कि 013 से कमजोर वर्गों के खिलाफ अत्याचारों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, 13 से महिलाओं के खिलाफ अपराधों में 42.6प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

बच्चों के खिलाफ अपराधों में 204.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। दलितों के खिलाफ अत्याचारों में 41.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आदिवासियों के खिलाफ अपराधों में 46.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साइबर अपराध में 1,689 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई है। और 24 में 1०,546 किसानों, 52,931 दिहाड़ी मजदूरों और 14,488 छात्रों ने आत्महत्या की है।

कांग्रेस का एनडीए सरकार पर बड़ा हमला

कांग्रेस ऑब्जर्वर का फाइल हो रहा वायरल

इस बीच, राष्ट्रीय सुरक्षा आयोग (एनसीआरबी) की 24 की आधिकारिक रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार, 24 में कानून से संघर्ष कर रहे किशोरों से जुड़े मामलों और वरिष्ठ नागरिकों के खिलाफ अपराधों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। 24 में किशोरों के खिलाफ कुल 34,878 मामले दर्ज किए गए, जो 23 में दर्ज किए गए 31,365 मामलों की तुलना में 11.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हैं। अपराध दर भी 2023 में 7.1 से बढ़कर 2024 में 7.9 हो गई। इस वर्ष के दौरान, इन मामलों के संबंध में 42,633 किशोरों को गिरफ्तार किया गया। इनमें से 34,648 किशोर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत अपराधों में शामिल थे, जबकि 7,985 विशेष और स्थानीय कानूनों (एसएलएल) से जुड़े थे।

आंकड़े कर रहे सच्चाई बयां

आंकड़ों से यह भी पता चला कि गिरफ्तार किए गए किशोरों में से अधिकांश, 77.7 प्रतिशत, 16 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के थे, जो आपराधिक गतिविधियों में बड़े किशोरों की अधिक संलिप्तता को दर्शाता है। वहीं दूसरी ओर, वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक आयु) के विरुद्ध अपराधों में 24 में 16.9 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि देखी गई, जहां 23 के 27,886 मामलों की तुलना में 32,602 मामले दर्ज किए गए। विभिन्न प्रकार के अपराधों में, चोरी के मामले सबसे अधिक 4,786 (14.7 प्रतिशत) थे, इसके बाद जालसाजी, धोखाधड़ी और जालसाजी (4,451 मामले, 13.7 प्रतिशत) के मामले थे। वरिष्ठ नागरिकों से जुड़े हत्या के मामले 1,229 थे, जो कुल मामलों का 3.8 प्रतिशत थे।

सुप्रीम कोर्ट ने एमपी सरकार को लगाई कड़ी फटकार

» कर्नल कुरैशी विवाद : विजय शाह पर केस चलाने में देरी पर सख्त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मामलों के मंत्री कुंवर विजय शाह पर मुकदमा चलाने की मंजूरी देने के फैसले में हुई देरी पर नाराजगी जाहिर की। यह मामला भारतीय सेना की अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी के खिलाफ शाह की विवादित टिप्पणियों से जुड़ा है। कर्नल कुरैशी ने पिछले साल ऑपरेशन सिंदूर के दौरान मीडिया को जानकारी दी थी।

मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की बेंच ने राज्य सरकार से सवाल किया कि उसने सुप्रीम कोर्ट के पिछले निर्देश का पालन क्यों नहीं किया, जिसमें उसे दो हफ्तों के भीतर मंजूरी देने पर फैसला लेने को कहा गया था। सीजेआई सूर्यकांत ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अब बस हमारे आदेश का पालन करें। बहुत हो चुका। सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि शाह की टिप्पणियां दुर्भाग्यपूर्ण थीं और सुझाव दिया कि मंत्री का इरादा शायद कर्नल कुरैशी की तारीफ करना था, लेकिन वे अपनी बात ठीक से कह नहीं पाए। सॉलिसिटर जनरल (एसजी) मेहता ने कहा, उन्होंने जो कहा, वह निश्चित रूप से दुर्भाग्यपूर्ण था। हो सकता है कि वे महिला अधिकारी की तारीफ करना चाहते हों लेकिन वे अपनी बात ठीक से कह नहीं पाए और कुछ और ही कह बैठे। उन्होंने यह भी साफ किया कि यह उनका निजी विचार था, न कि मध्य प्रदेश सरकार का पक्ष। हालांकि, सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच इस बात से सहमत नहीं हुई। सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की कि यह सिर्फ दुर्भाग्यपूर्ण नहीं था। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण था। जब एसजी मेहता ने फिर दोहराया कि शाह से शायद गलती से कुछ निकल गया हो, तो पीठ ने कहा कि राजनेता आम तौर पर अपने सार्वजनिक बयानों में काफी सावधान और अपनी बात कहने में माहिर होते हैं।

बीसीसीआई की टीम में बड़े बदलाव की तैयारी!

» टी20 और वनडे के अय्यर बन सकते हैं कप्तान, कोचिंग स्टाफ से जुड़ सकते हैं बहुतुले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भारतीय टीम में आईपीएल 2026 के बाद बड़े बदलाव के आसार हैं। बीसीसीआई की नजर टी20 लीग के बाद भारतीय टी20 और वनडे टीम के लिए एक ही कप्तान नियुक्त करने पर है। फिलहाल भारतीय टेस्ट और वनडे टीम की कमान शुभमन गिल संभाल रहे हैं, जबकि सूर्यकुमार यादव टी20 कप्तान हैं। हालांकि, बोर्ड चाहता है कि व्हाइट बॉल फॉर्मेट में भारत का एक कप्तान हो और रेड बॉल का अलग। ऐसा भी हो सकता है कि शुभमन गिल को तीनों प्रारूप की कप्तानी सौंपी जाए। हालांकि, कप्तानी के लिए बीसीसीआई की पहली पसंद आईपीएल में लगातार शानदार प्रदर्शन कर रहे श्रेयस अय्यर है।

सूर्यकुमार यादव के खराब फॉर्म से जूझने के बीच अय्यर को टीम की कप्तानी सौंपी जा सकती है। इसके अलावा, बोर्ड की इच्छा है कि वनडे और टी20 दोनों प्रारूपों में एक ही कप्तान हो, ऐसे में अय्यर को ही दोनों फॉर्मेट की कप्तानी की जिम्मेदारी भी दी जा सकती है। वहीं पूर्व भारतीय स्पिनर साईराज बहुतुले को टीम इंडिया का नया स्पिन-बॉलिंग कोच बनाए जाने की चर्चा तेज हो गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक टीम इंडिया के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने बीसीसीआई से विशेषज्ञ-गेंदबाजी कोच नियुक्त करने की सिफारिश की है और इस अहम जिम्मेदारी के लिए बहुतुले का नाम आगे बढ़ाया है। उन्होंने आगे कहा, सूर्यकुमार यादव हमारे वर्ल्ड कप विजेता कप्तान रहे हैं और उनके योगदान का सम्मान भी किया जाएगा। वहीं, बीसीसीआई सूर्यकुमार की फॉर्म में वापसी नहीं हो पा रही है और बीसीसीआई इससे परेशान भी है। हालांकि, सूर्यकुमार यादव अब तक एक भी टी20 अंतर्राष्ट्रीय सीरीज नहीं हारे हैं। दूसरी ओर, श्रेयस अय्यर ने दो साल से ज्यादा समय से कोई टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच नहीं खेला है। उनका पिछला टी20 अंतर्राष्ट्रीय मुकाबला दिसंबर 2023 में था।

आईपीएल: घर में लगातार पांचवां मुकाबला हारी दिल्ली

नई दिल्ली। अनुकूल रॉय और कार्तिक त्यागी की घातक गेंदबाजी के बाद फिन एलन की धुआंधार बल्लेबाजी के दम पर केकेआर ने दिल्ली कैपिटल्स को आठ विकेट से हरा दिया। अरुण जेटली स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली ने पथुम निसांका की अर्धशतकीय पारी की मदद से 20 ओवर में आठ विकेट पर 142 रन बनाए। जवाब में केकेआर ने 14.2 ओवर में दो विकेट खोकर 147 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस सीजन दिल्ली की यह घर में लगातार पांचवीं हार है। वहीं, कोलकाता ने मौजूदा सत्र की चौथी जीत के साथ अंक तालिका में सातवां स्थान हासिल कर लिया। अब उनके खाते में नौ अंक हो गए। वहीं, दिल्ली आठ अंक के साथ आठवें स्थान पर लुढ़क गई।

भाजपा से कोई गठबंधन नहीं

» हुमायूं कबीर ने कहा- पश्चिम बंगाल के चुनावी नतीजों के बाद उनकी पार्टी विपक्ष में बैठेगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। आम जनता उन्नयन पार्टी (एजेयूपी) के प्रमुख हुमायूं कबीर ने भाजपा के साथ गठबंधन की किसी भी संभावना को खारिज करते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल के हालिया चुनावी नतीजों के बाद उनकी पार्टी विपक्ष में बैठेगी। कबीर ने कहा कि भाजपा के साथ गठबंधन का कोई सवाल ही नहीं उठता। अब जब सुवेंदु अधिकारी दोनों सीटें जीत ली हैं, तो उन्हें एक सीट छोड़नी ही पड़ेगी। उस सीट पर जल्द से जल्द उपचुनाव होने चाहिए... हम विपक्ष में बैठेंगे। गठबंधन की क्या जरूरत है?

उन्होंने बहुमत से जीत हासिल की है... जैसा कि मोदी कहते हैं, सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, अगर ऐसा होता है, तो मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है। कबीर ने हाल ही में विपक्षी नेताओं, जिनमें एसपी और टीएमसी के नेतृत्व शामिल हैं, के बीच हुई राजनीतिक मुलाकातों और बैठकों और मुलाकातों के समय और उद्देश्य पर सवाल उठाए और ममता बनर्जी पर व्यक्तिगत रूप से कड़ी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि दो महीने तक चुनाव प्रचार के दौरान अखिलेश यादव कहां थे? उन्हें ममता के पास आकर समर्थन देना चाहिए था। अभिषेक हर सुबह राहुल के घर चाय पीने जाते हैं। तो फिर राहुल ने ममता के खिलाफ उम्मीदवार क्यों खड़ा किया? ममता बनर्जी झूठी भी हैं।

दुष्यंत चौटाला को हाई कोर्ट से राहत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। हरियाणा के पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला को पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। हाई कोर्ट ने उनकी याचिका पर सुनवाई करते हुए हरियाणा सरकार, केंद्र सरकार और सीबीआई को नोटिस जारी कर पूरे मामले में विस्तृत जवाब तलब किया है। अदालत ने एसआईटी की अब तक की कार्रवाई पर भी सवाल उठाते हुए जांच की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करने को कहा है।

सुनवाई के दौरान दुष्यंत चौटाला की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता विनोद घई ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता शुरू से ही जांच में सहयोग देने के लिए तैयार हैं, लेकिन अब तक एसआईटी की ओर से उन्हें न तो कोई नोटिस जारी किया गया और न ही पूछताछ के लिए बुलाया गया। उन्होंने कहा कि बिना किसी औपचारिक प्रक्रिया के मामले को लंबित रखना कानून की स्थापित प्रक्रिया के विपरीत है।

पार्टी में टूट की चर्चाएं बेबुनियाद: उमर

» विपक्ष के नेता सुनील शर्मा के बयान को सीएम ने नकारा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर की राजनीति एक बार फिर अटकलों और बयानबाजी के केंद्र में आ गई है। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की निर्णायक जीत के बाद जम्मू-कश्मीर विधानसभा में विपक्ष के नेता सुनील शर्मा के उस बयान ने राजनीतिक हलकों में हलचल तेज कर दी, जिसमें उन्होंने जम्मू-कश्मीर को पार्टी का अगला लक्ष्य बताया था। उन्होंने कहा था कि हो सकता है कि उद्धव ठाकरे की शिवसेना की तरह उमर अब्दुल्ला के विधायक भी उनका साथ छोड़ जाएं। इस टिप्पणी के बाद नेशनल कांफ्रेंस के भीतर संभावित उठापटक और दल बदल की चर्चाएं तेज हो गईं।

हालांकि मुख्यमंत्री ने इन अटकलों को पूरी तरह निराधार बताते हुए सरकार की स्थिरता पर भरोसा जताया है। हालांकि उमर ने इन अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि यदि नेशनल कांफ्रेंस के विधायक पार्टी छोड़ने की कोशिश कर रहे होते तो वह इस तरह सार्वजनिक कार्यक्रमों में सामान्य रूप से शामिल नहीं होते। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि सरकार को अस्थिर करने या पार्टी में टूट की चर्चाएं पूरी तरह बेबुनियाद हैं। उमर का यह बयान राजनीतिक संदेश देने वाला माना जा रहा है, जिसके जरिए उन्होंने अपनी सरकार की मजबूती दिखाने की कोशिश की। बता दें कि यह पूरा विवाद तब शुरू हुआ जब सुनील शर्मा ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी पिछले एक वर्ष से जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक रणनीति पर काम कर रही है और यह क्षेत्र पार्टी का अगला प्रमुख लक्ष्य है।

मंत्रिमंडल विस्तार की संभावना नहीं : फारूक

वहीं, राजनीतिक सरगर्मियों के बीच नेशनल कांफ्रेंस अध्यक्ष फारूक को भी सामने आकर स्थिति स्पष्ट करनी पड़ी। उन्होंने श्रीनगर स्थित पार्टी मुख्यालय नवाए सुबह में पत्रकारों से बातचीत के दौरान मंत्रिमंडल विस्तार की संभावनाओं को सिरे से खारिज कर दिया। फारूक ने साफ कहा कि फिलहाल किसी कैबिनेट विस्तार की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। उनके इस बयान को भी पार्टी के भीतर किसी संभावित असंतोष या फेरबदल की चर्चाओं को शांत करने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

सीएम बनते ही विपक्ष के निशाने पर आए शुभेन्दु

शिवसेना यूबीटी व टीएमसी ने उठाए सवाल, टीएमसी का ममता बनर्जी के नेतृत्व में लड़ाई जारी रखने का ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के साथ ही सियासी बयानबाजी में तेजी आई है। भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने शनिवार को पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनके सीएम बनने पर उन पर चौतरफा वार भी शुरू हो गया है। टीएमसी, शिवसेना युबीटी समेत कई विपक्षी दलों ने भाजपा पर करारा प्रहार किया है। इस बीच पूर्व सीएम ममता बनर्जी ने अपना एक्स प्रोफाइल अपडेट कर दिया है।

तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद चुनाव आयोग, सरकारी एजेंसियों और चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता पर सवाल उठाए हैं। अभिषेक बनर्जी ने दावा किया कि इस चुनाव में करीब 30 लाख वास्तविक मतदाताओं को कथित तौर पर वोटर लिस्ट से बाहर कर दिया गया। पूरे चुनाव के दौरान कई सरकारी एजेंसियों और चुनाव आयोग का रवैया पक्षपातपूर्ण नजर आया। उन्होंने कहा कि जिन लोकतांत्रिक संस्थाओं को निष्पक्ष तरीके से काम करना चाहिए था, उनकी भूमिका से चुनाव की निष्पक्षता, विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर गंभीर सवाल खड़े हुए हैं।

पश्चिम बंगाल में शुभेंदु अधिकारी ने पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। कोलकाता के ब्रिगेड ग्राउंड में आयोजित भव्य समारोह में प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह समेत भाजपा के कई दिग्गज नेता मौजूद रहे।

शपथ लेने के बाद शुभेंदु अधिकारी पीएम मोदी के पास पहुंचे और उनके पैर छूकर आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के साथ भाजपा के वरिष्ठ नेता दिलीप घोष समेत चार विधायकों ने मंत्री पद की शपथ ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल सरकार के शपथ ग्रहण के बाद सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा, 9 मई 26 का दिन इतिहास में एक बेहद महत्वपूर्ण दिन के रूप में अंकित किया जाएगा। यह तारीख हमारी स्मृतियों में एक ऐसे दिन के रूप में बना रहेगा, जो अपने साथ नियति का बोझ और आशा, गरिमा और सुशासन के एक नए अध्याय का वादा लेकर आया। कोलकाता के प्रतिष्ठित ब्रिगेड परेड ग्राउंड में, भाजपा सरकार का शपथ ग्रहण हुआ। मेरे और मेरे साथ कई अन्य लोगों को भी, इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ उस अवसर की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत हैं।

ममता बनर्जी ने बदला एक्स पर प्रोफाइल

इस्तीफा न देने पर अड़ीं ममता बनर्जी ने बदला एक्स पर प्रोफाइल, मुख्यमंत्री पद को लेकर लिखी खास बात पशिचम बंगाल चुनाव नतीजों में हार के बाद भी ममता बनर्जी अपने सीएम पद से इस्तीफा नहीं देना चाहतीं. उन्होंने चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए इस्तीफा देने से इनकार कर दिया था. अब इस बीच उन्होंने अपना सोशल मीडिया अकाउंट का बायो अपडेट किया है।

चुनाव बाद हिंसा और हमलों करवाए : अभिषेक बनर्जी

तृणमूल कांग्रेस नेता अभिषेक बनर्जी ने चुनाव बाद हिंसा की घटनाओं पर भी चिंता जताई. उन्होंने आरोप लगाया कि पार्टी कार्यालयों पर हमले किए जा रहे हैं, कार्यकर्ताओं को डराया-धमकाया जा रहा है और कई समर्थकों को अपने घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा है. उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में किसी भी राजनीतिक कार्यकर्ता को अपनी सुरक्षा और राजनीतिक विचारधारा के बीच चुनाव करने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए। अभिषेक बनर्जी ने कहा कि वह और उनकी पार्टी लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि तृणमूल कांग्रेस दिल्ली और पश्चिम बंगाल दोनों जगह मजबूत और मुखर विपक्ष की भूमिका निभाएगी. उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी के नेतृत्व में पार्टी लोकतंत्र, संवैधानिक मूल्यों और जनता के अधिकारों की लड़ाई बिना किसी डर और समझौते के जारी रखेगी।

भाजपा में भ्रष्ट व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाने की परंपरा: संजय राउत

शिवसेना (उद्धव ठाकरे) पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता संजय राउत ने तीखा हमला किया है। संजय राउत ने कहा कि बीजेपी ने इन्हीं के खिलाफ भ्रष्टाचार की मुहिम चलाई थी भाजपा में बाहर से आने वाले भ्रष्ट व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाने की परंपरा है उसे उन्होंने कायम रखा है। संजय राउत ने शुभेंदु अधिकारी को बंगाल का मुख्यमंत्री बनाए जाने पर कहा कि भारतीय जनता पार्टी का अभिनंदन करना चाहिए, जो अपनी परंपरा कभी तोड़ते नहीं. परंपरा कायम रखने में उनका हाथ कोई पकड़ नहीं पाएगा. कुछ साल पहले, इन्हीं शुभेंदु अधिकारी के खिलाफ भाजपा के लोगों ने, पूरे बीजेपी ने भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम चलाई थी. इन्हीं अधिकारी के खिलाफ बहुत बड़ी मूवमेंट चलाई थी। शिवसेना नेता ने कहा कि शुभेंदु अधिकारी को ऑन कैमरा रिश्वत लेते हुए उनको पकड़ा गया था और पूरे बीजेपी के ट्विटर हैंडल और सोशल मीडिया पर शुभेंदु अधिकारी ही चल रहा था महीनों-महीनों तक कि कितने भ्रष्ट व्यक्ति हैं. इस भ्रष्ट व्यक्ति के ऊपर ईडी की रेड्स हो गईं. फिर ये महान व्यक्ति बीजेपी में चला गया और आज उस राज्य का मुख्यमंत्री बना दिया गया।

लखनऊ में सील पर चल रही डील!

» एलडीए से मंडलायुक्त कार्यालय तक उठ रहे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क/ मो. शारिक

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में अवैध निर्माणों का जाल लगातार फैलता जा रहा है। शासन स्तर से शहर को सुनियोजित ढंग से विकसित करने के निर्देश दिए जाते हैं, लेकिन जमीनी हकीकत इन दावों से बिल्कुल उलट नजर आ रही है। लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) द्वारा जिन इमारतों पर सीलिंग और ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की जा चुकी है, उन्हीं भवनों पर दोबारा तेजी से निर्माण कार्य होने के आरोप लग रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, विभागीय कार्रवाई सिर्फ कागजों तक सीमित रह जाती है। निर्माण रुकने के बजाय और तेजी पकड़ लेता है।

कई मामलों में भवन निर्माण पूरा होने के बाद उनका संचालन भी शुरू हो जाता है, जबकि संबंधित प्रकरण मंडलायुक्त कार्यालय में अपील लंबित होने की बात कहकर जिम्मेदार अपना पल्ला झाड़ लेते हैं। अवैध होटल, कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स और बहुमंजिला इमारतों के कारण राजधानी की यातायात व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है। नो-पार्किंग जोनों में खड़ी गाड़ियों से सड़कें संकरी हो रही हैं, वहीं अवैध होटलों और व्यावसायिक गतिविधियों से निकलने वाला धुआं और प्रदूषण शहर के वातावरण को जहरीला बना रहा है।

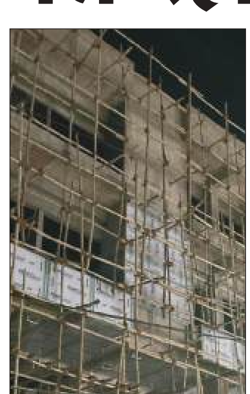

उपाध्यक्ष बोले पीआरओ से बात कर लीजिए

लखनऊ विकास प्राधिकरण उपाध्यक्ष से बात हुई उन्होंने बोला आप मेरे पीआरओ से बात कर लीजिए। आपको वर्जन मिल जाएगा। उसके बाद ज्ञानेंद्र वर्मा अपर सचिव से बात करना चाहा कॉल नहीं उठा। पीआरओ का भी काल नहीं उठा।

अवैध इमारत में फंस रहा है लोगों का पैसा

लगातार बस रहे अवैध इमारत में जब शासन स्तर पर मामला पहुंचता है तो कार्यवाही होती है इसके बाद सबसे बड़ी समस्या उन लोगों के सामने आती है जिन्होंने अपने गाढ़ी कमाई पाई पाई जोड़कर सपनों का आशियाना बनाने की सोचते हैं क्योंकि अवैध निर्माण पर बुलडोजर चल जाता है और इमारत में अपना घोंसला बनाने वाला अपने अरमानों को टूटता हुआ विभाग और बिल्डर की तरफ सिर्फ दो टूक निहारता रहता है।

सवालों के घेरे में जिम्मेदार तंत्र

लखनऊ विकास प्राधिकरण और मंडलायुक्त कार्यालय में आईएएस, पीसीएस और इंजीनियरिंग स्तर के अधिकारी तैनात हैं। इसके बावजूद सरकार की मंशा के अनुरूप कार्रवाई धरातल पर क्यों नहीं दिख रही? आखिर वह कौन सी कड़ी है जो बिल्डर, प्राधिकरण और अपील प्रक्रिया के बीच ऐसा तंत्र तैयार कर रही है, जिससे अवैध निर्माणों पर रोक नहीं लग पा रही?

कई इलाकों में अवैध निर्माणों की भरमार

राजधानी के नाका, बाजारखाला, अमीनाबाद, चौक, गोमती नगर, जानकीपुरम विस्तार, फैजाबाद रोड, दुबग्गा, काकोरी, मोहन रोड, सरफराजगंज, अलीगंज और मड़ियांव जैसे इलाकों में लगातार गगनचुंबी अवैध इमारतें खड़ी होने के आरोप लग रहे हैं। शासन और प्रशासन इन सवालों का जवाब कब तक देता है और राजधानी में अवैध निर्माणों के इस खेल पर कब लगाम लगती है। अक्सर विभागीय अधिकारियों की ओर से एक ही जवाब सामने आता है बिल्डिंग पर नोटिस, सीलिंग और ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की जा चुकी है, मामला मंडलायुक्त कार्यालय में अपील पर विचाराधीन है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि जब मामला अपील में होता है, तब भी निर्माण कार्य आखिर कैसे जारी रहता है? आखिर कौन है जो सील भवनों में भी काम रुकने नहीं देता

तमिलनाडु में सरकार बनने में अब भी रार

टीवीके ने कुछ और दलों का समर्थन मिलने का किया दावा

» एएमएमके चीफ दिनाकरन बोले उनका समर्थन पत्र जाली
» वीसीके नेता एसएस बालाजी ने कहा आज करूंगा स्पष्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में त्रिशंकु जनादेश आने के बाद नई सरकार के गठन को लेकर सस्पेंस गहराया हुआ है। टीवीके चीफ थलपति विजय बीते दो दिनों के दौरान दो बार राज्यपाल से मिलने पहुंचे और सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर सरकार बनाने का दावा पेश किया। हालांकि, नंबर गेम में थलपति विजय पीछे दिख रहे थे।

हालांकि, कांग्रेस के बाद भाकपा, माकपा व वीसीके ने टीवीके को समर्थन का ऐलान कर दिया था। बावजूद इसके टीवीके चीफ बहुमत के आंकड़ें से पीछे नजर आ रहे । उन्होंने राज्यपाल को समर्थन पत्र भेजा है। इसबीच एक विवाद भी उभर आया है। एएमएमके प्रमुख टीटीवी दिनाकरन ने विजय की पार्टी टीवीके के उस दावे को खारिज कर दिया है जिसमें उनके विधायक के समर्थन की बात कही गई थी, दिनाकरन ने समर्थन पत्र और वीडियो को एआई-जनरेटेड और फर्जी बताया है। इस राजनीतिक विवाद ने तमिलनाडु में विजय की गठबंधन सरकार बनाने की कोशिशों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। वहीं राज्यपाल पर विपक्ष सवालिया निशान लगा रहा है। वहीं चेन्नई में बोलते हुए, वीसीके नेता एसएस बालाजी ने कहा कि विजय के नेतृत्व वाली टीवीके पार्टी को समर्थन देने के संबंध में पार्टी की प्रेस कॉन्फ्रेंस के स्थान और समय की आधिकारिक घोषणा आज शाम लगभग 4 बजे की जाएगी।

टीवीके अहंकारी और घृणास्पद पार्टी : टीटीवी दिनाकरन

तमिलनाडु में पहली गठबंधन सरकार बनाने के विजय के गठबंधन का समर्थन करने से इनकार करने वाली पार्टी के टीटीवी दिनाकरन ने दावा किया है कि टीवीके द्वारा प्रदर्शित समर्थन पत्र जाली है। एएमएमके के महासचिव ने विजय के नेतृत्व वाली तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) को अहंकारी और घृणास्पद भी कहा है। बहुमत के लिए संघर्ष कर रही टीवीके ने पहले एक कार्यकारी गठबंधन बनाने के लिए अम्मा मक्कल मुन्नेत्र कज़गम (एएमएमके) से उसके एकमात्र निर्वाचित विधायक कामराज एस का समर्थन मांगा था।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4 पीएम** न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**